© IJCIRAS | ISSN (O) - 2581-5334
August 2019 | Vol. 2 Issue. 3

लोकतंत्र में नदी जल विवाद, गिरता भू-जल स्तर और मीडिया

Dr.Santose Kumar Pradhan
NGBU, Prayagraj

शोधसार (Abstract)

भारत में बढ़ती जनसंख्या एक गंभीर समस्या बन गई है। इसके लिए मूलभूत सुविधाओं की पूर्ति कर पाना केंद्र व राज्य सरकारों के लिए कठिन हो गया है। प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। वन काटे जा रहे हैं, पहाड़ तोड़े जा रहे हैं, नदियों को बंधा जा रहा है, पृथ्वी के बढ़ते तापमान ने वातावरण को गर्म किया है। इन सबके कारण धरती के समस्त जीव प्रभावित हो रहे हैं। और यह एक बड़े विवाद का कारण बनता जा रहा है। जल-जंगल-जमीन को लेकर तमाम विवाद सामाजिक विघटन पैदा कर रहे हैं। भू-जल स्तर जिस तेजी से नीचे गिर रहा है उससे भविष्य में शुद्ध पीने के पानी का संकट उत्पन्न होने वाला है और यह भारत के विभिन्न राज्यों में दिखाई भी पड़ रहा है। जहां तक बात नदियों के जल की है उसके बंटवारे को लेकर राज्यों के बीच जिस प्रकार से विवाद की स्थिति पैदा की जा रही है उसमें समस्या के समाधान की ओर प्रयास कम राजनीति ज्यादा हावी है, आम जन को कोई लाभ नहीं होने वाला है।

की वर्ड्स- लोकतंत्र, भूमिगत जल, नदियां, नदी जल विवाद, भू जल दोहन, कृष्णा, कावेरी, यमुना, सतलज, मीडिया

प्रस्तावना

पृथ्वी के प्रत्येक जीव को जल की आवश्यकता पड़ती है। जब तक जल है, तभी तक जीवन है। बिन पानी सब सून। जल संरक्षण का एक सामान्य सा नियम है कि इस पृथ्वी से जितना लिया है उतना वापस करना। इससे भूजल संतुलन बना रहता है। प्रकृति अपने नियमों से स्वयं बंधी है, बादल के रूप में पृथ्वी से जितना जल लेती हैं उतना वर्षा के रूप में वापस भी कर देती हैं। प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति प्रकृति के अत्यंत निकट रही है। प्रकृति का न्यूनतम उतना ही दोहन किया जाता था जितने की आवश्यकता होती थी। जल प्रबंधन एवं शुद्धिकरण की तत्कालीन व्यवस्थाएं आज भी प्रासंगिक हैं। प्रत्येक गांव में तालाब, पोखरों, कुंओं, तथा सिंचाई के साधनों का निर्माण किया जाता था। वर्षा का जल इनमें एकत्र होता था, भूमिगत जल पर्याप्त मात्रा में बना रहता था, गांवों या नगरों में पीने के पानी की समस्या नहीं थी, तालाबों से पशुओं के पीने का जल भी सहज ही उपलब्ध रहता था।

वैदिक साहित्य ज्ञान के अथाह सागर हैं। ऐसा कहा जाता है कि, जब विश्व के अधिकांश देशों की संस्कृतियां व साहित्य अपने शैशवकाल में थी तब भारतीय संस्कृति व साहित्य अपनी पूर्ण विकसीत अवस्था में विराजमान थी। आर्यभट्ट, वराहमिहिर या कालीदास जैसे अनगिनत विद्वान, वैज्ञानिकों ने अपने ज्ञान से विश्व का मार्गदर्शन किया। वैदिक परंपरा में जल को देवता के रूप में स्तुति की गई है, "आप देवताः पृथ्वी देवताः"। जल का निर्माण मित्र और वरूण से माना गया है। मित्र तथा वरुण के सम्मिश्रण को कुछ उष्णता प्रदान करके जल में परिवर्तित किया जा सकता है, "मित्रं हुवे पूत दक्षं वरुणं च रिशादसम् धियं धृतीचीनम् साधन्ता।" स्व० गुरुदत्त ने इस मंत्र की व्याख्या कुछ इस प्रकार से की, मित्र अर्थात् ऑक्सीजन, वरुण यानि हाइड्रोजन, रिशादसम् यानि दोनों को अग्नि युक्त करना, धृतीचीम् साधन्ता यानि सम्मिश्रण द्वारा, धियं जलं। विक्रमादित्य के नवरत्नों में कालीदास ने साहित्य में प्रसिद्धि प्राप्त की, आचार्य वराहमिहिर नक्षत्र विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, गणित एवं जल विज्ञान में प्रसिद्ध थे। छठी शताब्दी इ०पू० ४५ अध्यायों में रचित वृहद्संहिता के १२५ श्लोक मुख्य रूप से भूमिगत जल का पता लगाने से संबंधित हैं। वैदिक शब्दकोश निघण्टु में कूप शब्द ऐसे जलाशय के बारे में कहा गया है जिससे जल कठिनाई से निकले। मारकण्डेय पुराण में पृथ्वी पर जल का एकमात्र स्रोत सागर को ही बताया गया है। ईसा से एक शती पूर्व लिखे संस्कृत नाटक "प्रतिज्ञा यौगंधरायण" में भास ने जल प्राप्त करने के लिए भूमि की खुदाई ही बताया।

इ०पू० चौथी शताब्दी में शकंधु कूप का वर्णन पाणिनी ने किया है तथा कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में तड़ाग कूप तथा नहरों को बनाना राजा का प्रमुख कार्य बताया है। अथर्ववेद, तैत्तरीय आरण्यक ग्रंथों में भी जल प्राप्ति के बारे में बताया गया है। सिंधु सभ्यता के लोगों ने सिंचाई के लिए नहरों की व्यवस्था की थी, इंद्र को वर्षा का देव कहते थे। ऋषियों ने शुद्ध जल की उपलब्धता की कामना करते हुए कहा, "शुद्धा न आपस्तत्वे क्षरन्तु"।

पृथ्वी के जलीय आवरण में लगभग डेढ़ अरब घन किमी० पानी है। जो कि भूतल के ७० प्रतिशत हिस्से में फैले सागरों में है। जिसका ९७.३ प्रतिशत भाग समुद्री खारा और पेय नहीं है। २ प्रतिशत भाग ध्रुवीय क्षेत्रों तथा ग्लेशियर्स में बर्फ के रुप में जमा है। ०.१ प्रतिशत भूगर्भीय जल है तथा शेष ०.०६ प्रतिशत नदियों, झीलों तथा अन्य सतही स्रोतों के रुप में मौजूद है। केवल नदियां ही संसार में सागरों तक ४० हजार घन किमी० पानी वहन करती हैं। अर्थात्, नदियां वर्ष भर में जितना पानी वहन करती हैं वह दुनिया की न्यूनतम आवश्यकताओं को २५ हजार वर्ष तक पूरा कर सकती है। पिछले ५०-६० वर्षों में शक्तिशाली मशीनों के जरिये खेती, उद्योग व शहरी जरुरतों की पूर्ति के लिए इतना पानी खींचा गया कि भूजल के प्राकृतिक संचय और यांत्रिक दोहन के बीच का संतुलन बिगड़ गया है और जल स्तर नीचे गिरने लगा। केंद्रीय तथा उत्तरी चीन, पाकिस्तान के कई हिस्से, उ० अफ्रीका, मध्य पूर्व तथा अरब के देशों में यह समस्या बहुत गंभीर है। भारत की स्थिति भी गंभीर है। पंजाब, हरियाणा, पूर्वी और प० उत्तर प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों का भूजल स्तर प्रति वर्ष एक मीटर नीचे जा रहा है। बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश के अलावा कई अन्य राज्यों का भी भूजल स्तर तेजी से गिर रहा है। नीरी (नेशनल इन्वायरमेंट इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट) के अध्ययन के अनुसार भूमिगत जल के अत्यधिक दोहन के कारण पूरे देश में जल स्तर नीचे जा रहा है।

जल मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। भारत में विश्व की १७.५ प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। जबकि यहां विश्व के भू क्षेत्र एवं नवीकरणीय जल संसाधन का क्रमशः २.६ प्रतिशत एवं ४ प्रतिशत ही पाया जाता है। यहां १८६९ लाख घन मीटर पानी है जिसमें से ११२३ लाख घनमीटर ही उपयोग के लायक है। भारत में जल की प्रति व्यक्ति उपलब्धता सन् २०११ में १५४५ घन मीटर प्रतिवर्ष से घट कर २०२५ तक १३४१ घन मीटर ही रहने का अनुमान है। भारत में प्रति व्यक्ति जल संग्रहण क्षमता २०७ घन मीटर प्रति वर्ष है। यह भारतीय आवश्यकताओं की दृष्टि से काफी कम है। देश में लगभग १९.२ करोड़ परिवार हैं जिनमें ३९ प्रतिशत परिवारों को ही घर के अंदर पेयजल उपलब्ध है। ४४.३ प्रतिशत परिवारों को घर से थोड़ा दूर जाने पर पानी मिलता है। २०२५ तक, पेयजल हेतु ४४ प्रतिशत, कृषि हेतु १० प्रतिशत तथा उद्योगों हेतु ८१ प्रतिशत तक पानी की जरूरत का अनुमान है। अर्थात् कृषि, उद्योग व घरेलू उपयोग के लिए हमें १००० घन मीटर पानी चाहिए, जबकि विभिन्न जल स्रोतों से मात्र ५०० घन मीटर पानी ही मिल पा रहा है। १९५०-५१ में सिंचाई रकबा २२०.५६ लाख हेक्टेयर था, १९९५-९६ में ७८० लाख हेक्टेयर तथा आज लगभग १५०० लाख हेक्टेयर सिंचाई के लिए पानी चाहिए। बढ़ती जनसंख्या, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों, भविष्य में उपयोग हेतु जल की कमी, जल व नदी विवादों को देखते हुए सरकार ने २८ दिसम्बर २०१२ को राष्ट्रीय जल नीति को अंगीकृत किया। इसमें कहा गया कि पेयजल, घरेलू व पशुओं की आवश्यकताओं, खाद्य सुरक्षा हासिल करने, संपोषक कृषि को बल देने तथा अन्य बातों पर ध्यान देते हुए इसको आर्थिक वस्तु मानना चाहिए ताकि इसका संरक्षण और कुशल उपयोग किया जा सके।

लगभग सवा सौ करोड़ आबादी वाले भारत की बढ़ती जनसंख्या के कारण बेरोजगारी, भुखमरी, कुपोषण, शुद्ध पेयजल, कृषि व उद्योग में पानी की जरूरतों आदि अनेकों मामलों को लेकर चिंताएं बढ़ा दी हैं। जल प्रबंधन वास्तव में चुनौतियों भरा काम है। राह में अनेक रोड़े भी हैं। दिनोदिन जल की मांग और पूर्ति का अंतर बढ़ता ही जा रहा है।

जल विवाद

नदियों के पानी के बंटवारे को लेकर विवाद सर्वविदित है। कावेरी जल विवाद, सतलुज-यमुना विवाद इस बात का प्रमाण है कि पानी के लिए लड़ाई शुरू हो चुकी है। **कावेरी जल विवाद** बहुत पुराना है। इस विवाद को लेकर अक्सर कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच ठनी रहती है। इस विवाद के कारण दोनों राज्यों के बीच हिंसक प्रदर्शन हुए। **नर्मदा के पानी** के बंटवारे को लेकर गुजरात और मध्य प्रदेश के बीच विवाद है। दोनों राज्य ज्यादा से ज्यादा पानी का इस्तेमाल चाहते हैं। नर्मदा नदी मध्य प्रदेश में अमरकंटक से निकलती है। इसकी लम्बाई १३०० किमी० तथा बेसिन क्षेत्र ९८७९६ वर्ग किमी० है। नर्मदा जल विवाद में गुजरात और मध्य प्रदेश के साथ महाराष्ट्र भी शामिल है। अंतर्राज्यीय जल विवाद अधिनियम की धारा ४ के तहत केंद्र सरकार ने नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण का गठन किया। इस अधिकरण ने नर्मदा नदी से गुजरात को ९० लाख एकड़ फीट, मध्य प्रदेश को १८२.५ लाख एकड़ फीट, महाराष्ट्र को २.५ लाख एकड़ फीट जल उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया। **यमुना जल विवाद** यमुना नदी जल के बंटवारे से संबंधित विवाद काफी पुराना है। इससे देश के पांच राज्य हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश जुड़े हुए है। सबसे पहले यमुना जल समझौता १९५४ में मात्र दो राज्यों हरियाणा और उत्तर प्रदेश के मध्य हुआ था, जिसके अंतर्मन यमुना जल में हरियाणा का हिस्सा ७७ प्रतिशत और उत्तर प्रदेश का हिस्सा २३ प्रतिशत निर्धारित किया गया था। राजस्थान, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश के हिस्से का जिक्र तक नहीं आया था। इन राज्यों द्वारा भी अपने हिस्से की मांग के साथ ही विवाद गरमाने लगा। दिल्ली ने अपना हिस्सा बढ़ाने की मांग इस आधार पर की कि वह प्राप्त पानी का केवल ४० प्रतिशत भाग ही पीने से उपयोग करता है, शेष ८ प्रतिशत यमुना में चला जाता है। जिससे हरियाणा और उत्तर प्रदेश को लाभ मिलता है। **सोन नदी जल विवाद** तीन राज्यों- बिहार, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश के बीच है। १९७३ में ही सोन और रिहन्द नदियों के जल विवाद के हल के लिए बाणसागर समझौता हुआ था। बिहार शुरू से ही इस समझौते के सही तरीके से लागू नहीं करने का आरोप लगाता रहा है। समझौते के तहत रिहन्द नदी का पूरा पानी बिहार को आवंटित किया गया था लेकिन केंद्रीय उपक्रम एनटीपीसी और उत्तर प्रदेश सरकार रिहन्द जलाशय से बिहार के हिस्से का पानी इस्तेमाल करते रहे हैं। **कृष्णा नदी जल विवाद** के तहत कृष्णा नदी का पानी आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक के बीच कृष्णा नदी जल विवाद का एक कारण है। यह नदी महाबलेश्वर से निकलकर महाराष्ट्र के सतारा व सांगली जिलों से होकर कर्नाटक व दक्षिणी आंध्र में बहती है। इस विवाद के निर्णय में कर्नाटक को ७०० अरब क्यूसेक, आंध्र प्रदेश को ८०० अरब क्यूसेक व महाराष्ट्र को ५६० अरब क्यूसेक पानी के उपयोग की छूट दी गयी। कई निर्णयों के बाद भी कृष्णा नदी जल विवाद का अंत नहीं हुआ। इसकी अगली सुनवाई सन् २०५० के बाद होगी। **गोदावरी नदी जल विवाद** भारत की सबसे बड़ी नदी का विवाद है। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, उड़ीसा व आंध्र प्रदेश के बीच काफी विवाद है। १९६९ में गठित एक कमेटी ने इस नदी के विवाद पर अपनी रिपार्ट सौंपी, लेकिन यह विवाद पूरी तरह नहीं सुलझा। **सतलज-रावी-व्यास विवाद** संयुक्त पंजाब में नदी जल विवाद जैसी कोई बात नहीं थी। पंजाब-हरियाणा के बीच जल बंटवारे से संबंधित विवाद शुरू हुआ। तालाबों की दुर्दशा अंग्रेजों के भारत आगमन के बाद से ही शुरू हो गयी थी। अंग्रेजों ने अपव्यय को रोकने के लिए तालाबों के लिए दी जाने वाली राशि को आधा कर दिया। सारे तालाबों की देखरेख का काम पीडब्ल्यूडी को सौंप दिया गया। आज तालाबों को पाट कर नई कालोनियां बसाने से शहरों से इनका अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है। कुंओं की दशा सबसे बुरी है। गांवों में भी अब नल का पानी पहुंचाने की योजना के कारण कुंओं की महत्ता समाप्त होती जा रही है। इन्हें या तो पाट दिया गया या उपेक्षित पड़े हैं।

भू-जल दोहन

स्वतंत्रता मिलने के बाद हमारे मन में एक बात बड़े गहरे से बैठ गई कि पृथ्वी पर मौजूद हवा, पानी और भूगर्भीय तत्वों के मालिक हम ही हैं। और इसका दोहन अपनी सुख-सुविधाओं के लिए करने के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र हैं। देश

में जमीन के भीतर के पानी का उपयोग सिंचाई तथा घरेलू उपयोग के लिए किया जा रहा है। चूंकि पानी का सारा प्रबंधन सरकारी हाथों में जाने के बाद भूमिगत जल को लोगों ने अपने कब्जे में ले लिया। भूमिगत जल निकालने के लिए लगभग दो करोड़ ट्यूबवेल्स का प्रयोग किया जा रहा है। जो कि ऊर्जा व्यय को बढ़ा दिया, क्योंकि सब्सिडी से मिलने वाली बिजली ने भू-जल दोहन को अधिक प्रोत्साहित किया है। इसके अलावा शहरों में बहुमंजिला इमारतों में भी जेट पंप लगाकर खूब पानी खींचा जा रहा है। टंकी का पानी भरने के बाद काफी देर तक बहता रहता है। कोई रोकने-टोकने वाला नहीं। देश के सामने उक्त दोनों ही प्रकार से जल दोहन को रोकना एक बड़ी चुनौती है।

मीडिया दृष्टि

विश्व एक गांव की परिकल्पना दुनिया भर के देशों के लिए सर्वथा नई थी, जिसे भारत सदैव से ही वसुधैव कुटुम्बकम् कहता आया है। समाज जीवन में हो रहे गुणात्मक विकास ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, लोगों में सकारात्मक विकास की एक नई सोच पनपी है। इस नये विचार प्रवाह के निर्माण में मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भूमंडलीकरण व उदारीकरण के दौर में विकास, आधुनिकता, प्रौद्योगिकी, तकनीकि, जलवायु परिवर्तन, जल संरक्षण व जल प्रबंधन आदि की विश्वव्यापी चर्चायें चल रही हैं। मानवीय जीवन से जुड़े प्रत्येक क्षेत्र को इन शब्दों ने स्पर्श किया है। समय के साथ मनुष्य तकनीकों के साथ स्वयं को जुड़ा हुआ पाता है। गति जीवन और विकास का अंग है। विज्ञान, तकनीकि, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, व्यवस्था आदि गत्यात्मक कार्यों पर निर्भर हैं। मीडिया में तकनीकि के प्रयोग ने लोगों की भावाभिव्यक्ति को मंच प्रदान किया है। वर्तमान परिदृश्य में जल संकट व जल प्रबंधन की दिशा में समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, इलेक्ट्रानिक मीडिया तथा न्यू मीडिया सकारात्मक पहल करती दिखाई है।

हिन्दी, अंग्रेजी व भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों, पत्रिकाओं के अलावा चैनलों ने भी जल संकट और उसके समुचित प्रबंध के मुद्दे को समय-समय पर प्रकाशित किया/दिखाया। मामला चाहे प्रशासनिक लापरवाही का रहा हो या आम जन के उपेक्षित रवैये का मीडिया ने सावधान करने तथा समाधान की ओर भी संकेत किया। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, पंजाब, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश आदि राज्यों में नदियों, तालाबों की खबरों को प्रमुखता दी है। दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिंदुस्तान, दैनिक भास्कर, नई दुनिया, राजस्थान पत्रिका, आज, स्वदेश, जनसंदेश टाइम्स, गुजरात समाचार-गुजरात, दिनथांथी-तमिल, लोकमत-मराठी, आनंद बाजार पत्रिका-बंगाली, हिन्दुस्तान टाइम्स, टाइम्स ऑफ इंडिया, द हिन्दू, पायनियर, इंडिया टुडे, पांचजन्य, योजना, कुरूक्षेत्र, लाइव इंडिया हिन्दी पत्रिका आदि तथा आज तक, इंडिया टीवी, न्यूज नेशन, राज्यसभा टीवी, लोकसभा टीवी, पी ७, ईटीवी, आदि चैनलों ने अलग-अलग समय पर पानी से संबंधित खबरों को गंभीरता के साथ उठाया है। यही नहीं फेसबुक, टिव्टर, के अलावा विभिन्न प्रकार की वेब साइट्स पर पानी के संकट की बातें उठती हैं। पानी को लेकर काम करने वाली संस्थाओं ने अपने काम तथा उसके सकारात्मक प्रभावों को अपनी वेब साइट्स पर भी दिखाया हैं। इंडिया वाटर पोर्टल नाम के वेब पेज पर जल प्रबंधन, जल संकट, नदियों, तालाबों की सफाई, शुद्ध पेयजल को लेकर किए गए काम को भी प्रस्तुत किया गया है।

मीडिया ने समय-समय पर लेखों, खबरों, स्टोरी, फीचर, विशेषज्ञों की राय, शोध पत्र या जल से संबंधित किए गए कार्यों, कृषि वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों की टिप्पणियां, राय, आदि को न केवल प्रकाशित किया बल्कि उसका फालोअप भी दिया। विभिन्न चैनलों ने डाक्यूमेंट्री, समाचारों तथा पैनल बहस के रूप में खबरों को दिखाया। उत्तर प्रदेश की प्रमुख नदियों में गंगा व यमुना के प्रदूषित होने का मुद्दा तथा उस पर सरकार की त्वरित प्रतिक्रिया के रूप में कार्यवाही मीडिया की ही देन है। दैनिक जागरण ने गंगा की अविरलता और निर्मलता को लेकर पूरे एक हफ्ते तक गंगा यात्रा निकाली और इस कार्यक्रम की खूब कवरेज भी हुई। उद्योगों के प्रदूषित जल का नदियों में छोड़ना, शहरों का गंदा पानी नदियों में बड़े-बड़े नालों से बहाना,

मृत पशुओं को नदियों में बहाना, गणेश उत्सव तथा दुर्गा पूजा के समय मूर्तियों का विसर्जन नदियों में करना, नदियों के किनारे शौच, शहरों का कूड़ा नदियों के किनारे डालना, सीवेज का गंदा पानी बिना साफ किए नदियों में डालना, आदि अनेकों अवसरों पर मीडिया की दृष्टि बनी रही। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्देश के बाद मीडिया की पहल का ही यह असर रहा कि गणेश उत्सव तथा दुर्गा पूजा के बाद मूर्तियों के विर्सजन के लिए प्रशासन ने एक बड़े से कृत्रिम तालाब को बनवा कर उसमें नदियों का जल भर कर विसर्जन की पद्धति चालू की। जनता को इसके लिए जागरूक करने में मीडिया ने महत्वपूर्ण पहल की। इससे नदियों को प्रदूषित होने से बचाया जा सका। देश भर में नदियों, तालाबों के संरक्षण, प्रबंधन के क्षेत्र में काम करने वाले स्वयंसेवी संगठनों के अलावा अन्य लोगों के इस दिशा में किए गए सार्थक प्रयास को मीडिया ने प्रमुखता दी।

निष्कर्ष

पृथ्वी पर प्रकृति ने जीवन चक्र के कुशल संचालन के लिए हवा और पानी के अलावा अनेकों चीजें व्यवस्थित तरीके से संजोए रखे थी, जिसे हजारों वर्षों से मनुष्य उपभोग करता आ रहा है। पृथ्वी पर रहने वाला समाज प्रकृति के अनुकूल जीवन जब तक जीता रहा उसे शुद्ध हवा, पीने के लिए शुद्ध पानी, खाने को शुद्ध फल व अनाज मिल जाया करते थे। प्रकृति और शरीर का सांजस्य जब तक बना रहा व्यक्ति गंभीर रोगों से दूर रहा। अनियमित जीवन पद्धति ने विभिन्न प्रकार की समस्याओं को जन्म दिया। बदले परिवेश में मनुष्य ने प्रकृति को अपना दास मान कर उसका उपभोग, दोहन तथा क्षरण करने लगा। धरती पर मौजूद सारे तत्व केवल मानवीय उपभोग के लिए ही बने हैं ऐसा भ्रम मानव मस्तिष्क में घर कर गया। जिसका दुष्परिणाम न केवल मनुष्य बल्कि उसके कारण पशु-पक्षी भी भुगत रहे हैं। हवा प्रदूषित, जल प्रदूषित, धरती तक को प्रदूषित कर दिया गया। सब कुछ सरकार करेगी व्यक्ति कुछ नहीं करेगा जैसी आम धारणा प्रचलित हो गई। लोकतांत्रिक समाज में अधिकारों की मांग, उपभोग की अधिकता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी के कारण जल प्रबंधन की समस्या यथावत मौजूद है। जल संसाधनों के अवहनीय प्रयोग के लिए सरकारी नीतियां जिम्मेदार हैं।

जल को लेकर विवाद के मामले राजनीति से प्रेरित लगते हैं। चूंकि जल का निर्माण नहीं किया जा सकता है। इसे बचाया जा सकता है। बढ़ती जनसंख्या और अंधाधुंध जल प्रयोग के कारण से लोगों में विवाद पैदा कर रहा है। नदी और भू जल की समस्या विकराल रूप लेती जा रही है। इसके बंटवारे को लेकर राजनीतिक दलों ने समाधान की बजाय विवाद ही खड़े किए। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, कर्नाटक, तमिलनाडु, म०प्र०, बंगाल आदि राज्य पानी विवाद के केंद्र में रहते हैं। वास्तव में नदी और भू जल पर किसी एक का अधिकार नहीं हो सकता। भारत के विभिन्न राज्यों में आपस में इसीलिए विवाद बना हुआ है कि नदियों के जल को अपनी संपत्ति मान बैठे हैं। और दूसरे राज्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति में रोड़े अटकाते नजर आते हैं। इन राजनीतिक विवादों ने समस्याओं को उलझाया अधिक है। निश्चय ही भू जल का गिरता स्तर चिंताजनक विषय है जिसका शीघ्र समाधान नहीं किया गया तो शायद आंतरिक अशांति और विवाद बढ़ सकते हैं। क्योंकि क्षेत्रीय दलों की राजनीति स्थानीय मुद्दों को जनभावनाओं के साथ जोड़कर सत्ता की चौखट तक ले जाने वाली लगती है। आम जन अपनी भूमिका तय करे। उसे भूमि के भीतर के जल को संयमित तरीके से उपयोग करना चाहिए। जितनी आवश्यकता हो उतना ही जल का दोहन किया जाए। जल को बचाने की जिम्मेदारी सबकी है। एक कवि ने प्रकृति से खिलवाड़ करने वालों को सावधान करते हुए लिखा- न तो हवा की है गलती न दोष नाविक का, जो लेके डूबा तुझे तेरा आचरण होगा।

References

[1] केशरी चंद्र पाण्डेय, जल के चमत्कारी औषधीय गुण, भारतीय धरोहर, जन०-फर० २०१०, वर्ष ५ अंक १, पेज ५३
[2] ऋग्वेद,१/२/७
[3] केशरी चंद्र पाण्डेय, जल के चमत्कारी औषधीय गुण, भारतीय धरोहर, जन०-फर० २०१०, वर्ष ५ अंक १, पेज ५३
[4] नीलिमा राजवैद्य, छुपा है जल वेदों में, भारतीय धरोहर, जन०-फर० २०१०, वर्ष ५ अंक १,पेज४५
[5] डा० गिरीशचंद्र चौधरी, जल विज्ञान एवं पर्यावरण-भारतीय शास्त्रों में, शोधपत्र, भारतीय विज्ञान वैभव रिसर्च जर्नल, प्रकाशक विज्ञान भारती केंद्र वाराणसी, २००३ पेज ५६
[6] अथर्ववेद, भूमि सूक्त, १२/१/३०
[7] प्रो० के०एस० तिवारी, जल के मायने, भारतीय धरोहर, जन०-फर० २०१०, अंक ५ वर्ष १, पेज ५
[8] आशुतोष, पानी तेरे रुप अनेक, भारतीय धरोहर, जन०-फर० २०१०, अंक ५ वर्ष १, पेज ६०
[9] अनिल प्रकाश, पानी पर खतरे की घंटी, द जर्नलिस्ट मीडिया रिसर्च जर्नल में लेख, जुलाई-सित० २०१२, वर्ष २ अंक २, पेज ६
[10] सम-सामयिक घटना चक्र अतिरिक्तांक २०१३, पेज २५
[11] प्रो० के०एस० तिवारी, जल के मायने, भारतीय धरोहर, जन०-फर० २०१०, अंक ५ वर्ष १, पेज ६
[12] सम-सामयिक घटना चक्र अतिरिक्तांक २०१३, पेज २५
[13] प्रो० के०एस० तिवारी, जल के मायने, भारतीय धरोहर, जन०-फर० २०१०, अंक ५ वर्ष १, पेज ६
[14] सम-सामयिक घटना चक्र अतिरिक्तांक २०१३, पेज २६
[15] पौराणिक और रियासत कालीन जल प्रबंधन, भारतीय धरोहर, जन०-फर० २०१०, पेज २४
[16] क्रांति चतुर्वेदी, पानी परंपराओं की अद्भुत मिसाल मध्य प्रदेश, भारतीय धरोहर जन०-फर० २०१० पेज २२
[17] डा० नितीश प्रियदर्शी, लाइव इंडिया, अक्टूबर २०१४, पेज४४
[18] अनुपम मिश्र, आज भी खरे हैं तालाब, नेशनल बुक ट्रस्ट भारत, नई दिल्ली, पेज २०-२६
[19] अनुपम मिश्र, जल प्रबंधन के लिए खुला था भारत का पहला इंजीनियरिंग कालेज, लेख, भारतीय धरोहर जन०-फर० २०१४, पेज ३०
[20] एस.ए. कुलकर्णी, जल और भारत का भविष्य, द जर्नलिस्ट मीडिया रिसर्च जर्नल में लेख, जुलाई-सित० २०१२, वर्ष २ अंक २, पेज ६
[21] ए०पी०एम० बक्शी, द कंस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया, यूनिवर्सल लॉ पब्लिकेशन, दिल्ली, वर्ष २०११, ११वां संस्करण, पेज १०६
[22] नारायणोपनिषद्
[23] यजुर्वेद, क्रमशः ६/२२ तथा १४/८
[24] राष्ट्रीय सहारा, हस्तक्षेप, १६ जुलाई २०१४, पेज ४
[25] सम-सामयिक घटना चक्र अतिरिक्तांक, २०१३, पेज ३७
[26] इमर्जिंग नीड्स एंड गोल्स ऑफ फॉरेस्टरी सेक्टरो, नेशनल फॉरेस्ट कमीशन २००६, रिकमेंडेशन नं० ४७(६.१६)
[27] www.indiawaterportal.org
[28] सम-सामयिक घटना चक्र अतिरिक्तांक भाग ३, २०१४, पेज ६५
[29] राष्ट्रीय सहारा हस्तक्षेप १६ जुलाई २०१४, पेज ४
[30] दैनिक जागरण इलाहाबाद, ५ जनवरी २०१५, पेज २०
[31] राष्ट्रीय सहारा हस्तक्षेप, १६ जुलाई २०१४, पेज ४
[32] डा० के.एस. तिवारी, पानी का गणित, भारतीय धरोहर, सित०-अक्टू० २०१४, पेज २३
[33] जितेंद्र कुमार पाण्डेय, भारत में जल प्रबंधन की सर्वांगीण विफलता अस्तित्व संबंधी चुनौतियां, योजना, अप्रैल २०१४, पेज ४१
[34] दैनिक जागरण इलाहाबाद, १ जनवरी २०१५, पेज १६
[35] जितेंद्र कुमार पाण्डेय, भारत में जल प्रबंधन की सर्वांगीण विफलता अस्तित्व संबंधी चुनौतियां, योजना, अप्रैल २०१४, पेज ४२
[36] ईशोपनिषद्, गीता प्रेस गोरखपुर।